९. बादल को घिरते देखा है

–नागार्जुन

किसी प्राकृतिक चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण करके उसके सौंदर्य का वर्णन लिखिए :–

लेखनीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । ● चित्र का विषय पूछें । ● चित्र में किन–किन चीजों को चित्रित किया है बताने के लिए कहें । ● चित्र का वर्णन लिखने के लिए कहें ।

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है ।
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी–बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल–नील सलिल में
समतल देशों से आ–आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त–मधुर विष–तंतु खोजते
हंसो को तिरते देखा है ।
बादल को घिरते देखा है ।

ऋतु बसंत का सुप्रभात था
मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारुण की मृदु किरणें थीं
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक–दूसरे से विरहित हो
अलग–अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होगी,

परिचय

जन्म : ३० जून १९११, तैरोनी, दरभंगा (बिहार)

मृत्यु : ५ नवंबर १९९८

परिचय : नागार्जुन जी हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे । आप भारतीय वर्ग संघर्ष के कवि हैं । बाबा नागार्जुन हिंदी, मैथिली, संस्कृत तथा बांग्ला में कविताएँ लिखते थे ।

प्रमुख कृतियाँ : युगधारा, खिचड़ी, विप्लव देखा हमने, भूल जाओ पुराने सपने आदि (कविता संग्रह) बाबा वटेसर नाथ, नई पौध, आसमान थे चाँद तारे आदि उपन्यास) कथा मंजरी भाग १–२, विद्यापति की कहानियाँ (बालसाहित्य), अन्नहीनम क्रियानाम (निबंध संग्रह)

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, हृदय की कोमल अनुभूतियों का साकार रूप कविता है ।

प्रस्तुत कविता में बाबा नागार्जुन जी ने प्रकृति सौंदर्य के वास्तविक रूप का बड़ा सुंदर वर्णन किया है ।

बेबस उन चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रेम-कलह छिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

शत-सहस्र फुट ऊँचाई पर
दुर्गम बर्फानी घाटी में
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो-होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह ?
कहाँ गई उसकी वह अलका ?
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभचुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है ।

—०—

श्रवणीय

यू-ट्यूब पर 'मानसरोवर' से संबंधित जानकारी सुनिए ।

पठनीय

'दीपदान' नामक डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी पढ़िए ।

संभाषणीय

'कस्तूरी मृग' विषय पर टिप्पणी तैयार कीजिए ।

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/G-nHHTCa4CQ

शब्द संसार

तुहिन (पुं.सं.) = तुषार बिंदु
सलिल (पुं.सं.)= जल
शीर्ष (वि.) = शिखर
देवदारु (पुं.सं.)) = देवदार वृक्ष
कुवलय (पुं.सं.) = नीलकमल

आसपास

अपने राज्य के पर्यटन स्थल की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल :

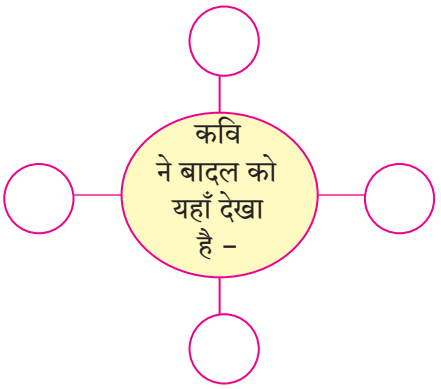

(ख) विशेष्य और विशेषण का मिलान कीजिए :

(ग) कवि के अनुसार अकल्पित कल्पनाएँ

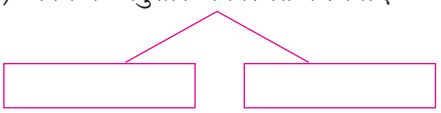

(घ) आकृति पूर्ण कीजिए :

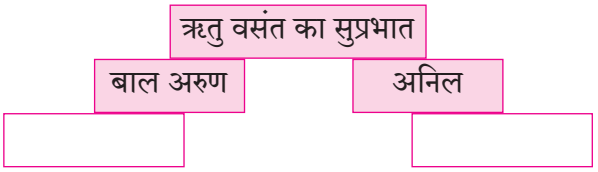

(२) भावार्थ लिखिए :–

ऋतु वसंत का ..... बितानी होगी ।

पाठ से आगे

अंतरजाल से बादल, हिमवर्षा, कोहरा, तुषार संबंधी जानकारी प्राप्त कीजिए ।

रचना बोध

.....
.....
.....